Research Antiquity - A Reference Book of Historical Perspective
ISBN : 978-93-93166-08-1

बीकानेर के शासक

डॉ. अमित मेहता
सहायक आचार्य
इतिहास विभाग
सीकर, राजस्थान

सारांश

राठौर राज्य की स्थापना से पूर्व तक बीकानेर अनेक नामों से जाना जाता रहा। महाभारत काल में इसे जांगल प्रदेश के नाम से जाना जाता था। किन्तु मौर्य, ग्रीक, गुप्त और प्रतिहार कालीन इस क्षेत्र के इतिहास की जानकारी प्राप्त नहीं होती है। 1176 ई. के एक अभिलेख में इस क्षेत्र का नाम 'जांगलकुपादुरा' एवं 'अजयपुरा' मिलता है। यहॉ पर पुरातात्विक सामग्री 11वीं सदी के बाद की ही प्राप्त होती है। जिससे ज्ञात होता है कि इस क्षेत्र पर चौहान, सांखलों, भाटियों तथा जाटों का आधिपत्य था। 1231ई. के 'रासीसर' गांव से प्राप्त अभिलेख से पता चलता है कि सांखला रायसी ने विक्रमसिम्हा चौहान, को मारकर उसका राज्य जांगल प्रदेश हस्तगत किया। रायसी के वंशज नापा सांखला के काल में ही इस राज्य पर राठौरों का आधिपत्य हुआ था।

राव बीका

जोधपुर के शासक राव जोधा की रानी नौरंगदे से बीका का जन्म वि.स. 1495 श्रावण सुदि पुर्णिमा (5 अगस्त 1438 ई.) मंगलवार को हुआ था। जोधपुर की ख्यात में उनकी जन्मतिथि वि.स. 1497 (1440 ई) का उल्लेख है। उनका वास्तविक नाम विक्रमसिंह था। उन्होने अपनी तलवार के दम पर जांगल प्रदेश को अपने अधीन कर एक स्वतन्त्र एवं नवीन राज्य की स्थापना की।

ISBN : 978-93-93166-08-1

उन्होने कोडमदेसर में वि.स. 1529 (147र्2 ई .) को अपने आपको इस परिक्षेत्र का राजा घोषित किया। तथा कोडमदेसर को अपनी राजधानी बनाया। तत्पश्चात् राती धाटी पर वि.स. 1545 ई ंबैसाख शुक्ल 2 (12 अप्रेल 148र्8 ई .) को बीकानेर शहर की स्थापना की। इसके बाद उन्होने अपने विद्रोही भाटियों, जाटों, जोंइयों, खीचियों, पठानों, बाधोडों, बलूचियों और भूटों को हराकर अपनी अभूतपुर्व वीरता, साहस एवं युद्ध कौशल, का परिचय दिया। उन्होने अपना अधिकार पंजाब के हिसार तक जमा लिया। राव बीका ने अपने पिता राव जोधा की मृत्यु के पश्चात् उनकी पूजनीय वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए जोधपुर पर चढ़ाई कर दी। राव सूजा के लिए उनका सामना करना कठिन था। अन्त में सूजा ने अपनी माता जसमादे के द्वारा पूजनीय वस्तुएं राव बीका को भिजवाकर उनसे सुलह कर ली। उनके स्मारक शिलालेख के अनुसार उनकी मृत्यु वि.स. 1561 आषाढ़ सुदि 5 (17जून) सोमवार को हो गई।

राव नरा

राव बीका की मृत्यु के पश्चात् उनका ज्येष्ठ पुत्र राव दरा बीकानेर की गद्दी पर बैठे। परन्तु कुछ माह राज्य करने के बाद ही वि.स. 1561 माघ सुदि 8 (13 जनवरी 1505 ई .) को मृत्यु हो गई।

राव लुणकर्ण

राव नरा की निःसन्तान मृत्यु के पश्चात् उनका छोटा भाई राव लुणकर्ण वि.स. 1561 फाल्गुन वदि 4 (23 जनवरी 1505 ई .) को बीकानेर की गद्दी पर बैठे। उनका जन्म वि.स. 1526 माघ सुदि 10 (12 जनवरी 1470 ई .) को हुआ। वे एक वीर तथा महत्वकांशी शासक थे। उन्होने दद्रेवा, चायलवाडा, (सिरसा), नागौर, फतेहपुर, जैसलमेर, फिरोजशाह कांठलिया, डीडवाना, वागड़, नहरड तथा सिंघाना आदि क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की। वे

ISBN : 978-93-93166-08-1

साहसी और असामान्य वीर होने के साथ ही बडे उदार, दानी, प्रजापालक और गुणियों का सम्मान करने वाले शासक थे। 'कर्मचन्द्रवंशोत्कीर्तनक काव्य' तथा बीठू-सूजा रचित 'जैतसी रो छंद' में उनकी समानता दानी 'कर्ण' से की है। उन्होने पूगल के भाटी हरा, उदयकरण के पुत्र कल्याणमल, रायमल शेखावत, अमरसरद्ध, तिहुणपाल जोहिया आदि के साथ मिलकर नारनोल पर चढ़ाई की। परन्तु वे सभी नारनोल के नवाब से मिल गये फलस्वरूप लूणकर्ण युद्ध में अकेले पड गये और अपने पुत्रों कुंवर प्रतापसी, वैरसी और नैतसी तथा पुरोहित देवीदास व कर्मसी सहित वि.स. 1583 बैसाख वदि 2 (31 मार्च 1526 ई.) को वीरगति को प्राप्त हो गये।

राव जैतसी जैतसिंह

राव लूणकर्ण की मृत्यु के पश्चात् उनका ज्येष्ठ पुत्र राव जैतसी 11 अप्रैल 1526 ई . को बीकानेर की गद्दी पर बैठे। उनका जन्म वि.स. 1546 कार्तिक सुदि 8 (31 अक्टुबर 1489 ई.) को हुआ। उन्होने अपने भांजे सांगा को 15,000 सैनिकों की सहायता दी। जिसकी सहायता से आमेर के एक बहुत बडे भाग पर अधिकार करके वहॉ 'सांगानेर' नामक अलग राज्य स्थापित किया।

मुगल शासक बाबर के पुत्र कामरान ने 1534 ई. में भटनेर हनुमानगढ़ के बाद बीकानेर पर आक्रमण किया। परन्तु जैतसी की कूटनीतिक चालों के परिणाम स्वरूप कामरान इस आक्रमण में विफल रहा और उसे भागना पडा। उनके समय में ही बीकानेर राज्य के गौरव में वृद्धि हुई। वे एक प्रजावत्सलशासक थे। जिनके शासन काल में अकाल, दुर्भिक्षा जैसे संकटों में भी प्रजा की हर प्रकार की सहायता तथा सुविधाऐं प्रदान की जाती थी।

जोधपुर के राव गांगा के पुत्र मालदेव ने भी बीकानेर पर आक्रमण

ISBN : 978-93-93166-08-1

किया था। इस युद्ध में राव जैतसी वि.स. 1598 फाल्गुन सुदि 11 (25 फरवरी 1542 ई .) को मारे गये।

राव कल्याणमल/ कल्याण सिंह

राव जैतसी की मृत्यु के पश्चात् उनका ज्येष्ठ पुत्र राव कल्याणमल बीकानेर की गद्दी पर बैठे। वे जैतसी के 13 पुत्रों में ज्येष्ठ पुत्र थे। उनका जन्म सोढी रानी कश्मीर दे से वि.स. 1575 माघ सुदि 6 (6 जनवरी 1519 ई.) को हुआ। उन्होने मालदेव के विरूद्ध दिल्ली के तात्कालीन शासक शेरशाह सूरी से सहायता मांगी। शेरशाह सुरी ने मालदेव पर आक्रमण कर कूटनीति द्वारा उसे पराजित कर दिया। परिणाम स्वरूप कल्याणमल का बीकानेर पर अधिकार हो गया।

1570 ई. में मुगल बादशाह अकबर ने नागौर में दरबार लगाया जिसमें राव कल्याणमल ने अपने पुत्र रायसिंह के साथ उपस्थित होकर अकबर की अधिनता स्वीकार कर ली। उसने अपनी पुत्री का विवाह भी अकबर के साथ करके मुगल राठौर मैत्री का एक नया अध्याय जोड दिया। कल्याणमल के स्मारक छतरी लेख के अनुसार उनकी मृत्यु वि.स. 1630 सुदि 2 (24 जनवरी 1574 ई.) को हो गई।

महाराजा रायसिंह

राव कल्याणमल की मृत्यु के पश्चात् उनके ज्येष्ठ पुत्र रायसिंह वि.स. 1630 (1574 ई.) को बीकानेर की गद्दी पर बैठे। उनका जन्म वि.स. 1598 श्रावण वदि 12 (20 जुलाई 1541 ई.) को हुआ था। उन्होने अपनी प्रशस्ति बीकानेर दुर्ग के भीतर सुरजपोल द्वार पर अंकित करवाई जिससे बीकानेर राज्य के इतिहास की विस्तृत जानकारी प्राप्त होती हैं। उनके समय में बीकानेर के वर्तमान किले का निर्माण मन्त्री कर्मचन्द ने करवाया था।

ISBN : 978-93-93166-08-1

मानसिंह के पश्चात् रायसिंह दुसरा हिन्दु था जिसे अकबर ने 5,000 जात व 5,000 सवार का मनसब प्रदान किया था। मुगल-राठौर सम्बन्धों को बनाए रखने हेतु रायसिंह ने अपनी पुत्री का विवाह अकबर के पुत्र सलीम के साथ किया था। उन्होने बीकानेर प्रशासन में मुगल प्रशासन तथा कर प्रणाली की अनेक विशेषताओं को अपनाया था जिससे बीकानेर राज्य की आर्थिक स्थिति में बहुत सुधार आया।

वह सभी धर्मो का आदर करता था। उसका मन्त्री कर्मचन्द जैन धर्मावलम्बी था। अनेक जैन मन्दिरों का जीर्णोद्धार उनके समय में हुआा था। 'कर्मचन्दवंशोत्कीर्तनक काव्य' में उन्हे 'राजेन्द्र' कहा है। और उन्हे विजित शत्रुओं के साथ भी सम्मान का व्यवहार करने वाला शासक बताया है।

जब जहांगीर ने रायसिंह की नियुक्ति बुरहानपुर में की तब वे सुरसिंह के साथ वहॉ चले गये जहॉ उनका निधन बीमारी से वि.स. 1668 माघ वदि 30 (22 जनवरी 1612 ई.) बुधवार को हो गया।

महाराजा दलपतसिंह

महाराजा रायसिंह की मृत्यु के पश्चात् उनके ज्येष्ठ पुत्र दलपत सिंह बीकानेर की गद्दी पर बैठे। उनका जन्म वि.स. 1621 फाल्गुन वदि 8 (24 जनवरी 1565 ई.) को हुआ था। अपने प्रखर स्वभाव के कारण वह बादशाह जहॉगीर को प्रसन्न नहीं रख सका। अतः बादशाह ने रायसिंह के दुसरे पुत्र सूरसिंह को सैनिक सहायता भिजवाई। सूरसिंह ने छल करके बीकानेर के सरदारों को अपने पक्ष में कर लिया। युद्ध के मैदान में दलपत सिंह चुरू के ठाकुर भीमसिंह बलभद्रोत के साथ हाथी पर बैठ कर आया। अवसर पाकर ठाकुर भीमसिंह बलभद्रोत ने दलपत सिंह के हाथ पिछे से पकड़ लिये जिससे शत्रुओं ने जीवित पकड़ कर बंदी बना लिया और अजमेर भेज दिया।

ISBN : 978-93-93166-08-1

वि.स.1670 फाल्गुन वदि 11 (25 जनवरी 1614 ई.) को दलपत सिंह वीरता पूर्वक शत्रुओं से मुकाबला करते हुए अजमेर में मारे गये।

महाराजा सूरसिंह

मुगल बादशाह की सहायता से अपने ज्येष्ठ भ्राता महाराजा दलपतसिंह को हराने के बाद सूरसिंह वि.स. 1670 (1613 ई.) को बीकानेर की गद्दी पर बैठे। उनका जन्म वि.स. 1651 पौष वदि 12 (28 नवम्बर 1594 ई.) को हुआ था। उन्होने गद्दी पर बैठे ही सर्वप्रथम अपने पिता के साथ विश्वासघात करने वाले विरोधियों को मरवा डाला।

बादशाह जहॉगीर तथा उनकी पत्नी नूरजहॉ ने अपने अनेक फरमानों में सूरसिंह को 'राजा' की पदवी से सम्मानित किया था। शहजादा खुर्रम ने अपने निशान में उन्हे 'उच्चकुल के राजाओं में श्रेष्ठ' लिखा था। इसके अलावा शहाजहॉ ने उन्हे 'अपने बराबर वालों में श्रेष्ठ' कहकर भी सम्मानित किया था। उन्होने लगभग 51 फरमान तथा निशान प्राप्त हुए थे। उनकी स्मारक छतरी पर लगे लेख के अनुसार उनका निधन वि.स. 1688 अष्विन वदि 6 अमावस्या (15 सितम्बर 1631 ई.) गुरूवार को हुआ था।

महाराजा कर्णसिंह

महाराजा सूरसिंह की मृत्यु के पश्चात् उनके ज्येष्ठ पुत्र कर्णसिंह वि.स. 1688 कार्तिक वदि 13 (13 अटुम्बर 1631 ई.) को बीकानेर की गद्दी पर बैठे। उनका जन्म वि.स. 1673 श्रावण सुदि 6 (10 जुलाई 1616 ई.) को हुआ था। मुगल बादशाह औरंगजेब सभी हिन्दु राजाओं को मुसलमान बनाना चाहता था। उसके इस इरादे का पता जब महाराजा कर्णसिंह को चला, तब उन्होने धर्मरक्षा के लिए सिर कटवाने का निश्चिय कर लिया। परिणाम स्वरूप अन्य राजाओं ने उन्हे ''जांगलधर पादशाह'' की उपाधि प्रदान की।

ISBN : 978-93-93166-08-1

औरंगजेब ने महाराजा कर्णसिंह पर मुगल विरोधी गतिविधियों का आरोप लगा कर गद्दी से हटा दिया और उनके पुत्र अनुपसिंह को 2000 जात और 1500 सवार का मनसब देकर बीकानेर का राज्यधिकार सौंप दिया। उनके स्मारक छतरी लेख के अनुसार उनका निधन वि.स. 1726 आषाढ़ सुदि 4 (22 जुन 1669 ई.) मंगलवार को हुआ था।

महाराजा अनुपसिंह

महाराजा कर्णसिंह के जीवित रहते हुए ही मुगल बादशाह औरंगजेब ने उनके पुत्र अनुपसिंह को बीकानेर का राज्यधिकार सौंप दिया। उनका जन्म वि.स. 1695 चैत्र सुदि 6 (11 मार्च 1638 ई.) को हुआ था। अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् वि.स. 1726 (4 जुलाई 1669 ई.) को बीकानेर की गद्दी पर बैठे। अनुपसिंह ने मुगल सेनानायक के रूप में दक्षिण भारत में अनेक लडाईयां लडीं। उसे वहॉ बीजापुर तथा औरंगाबाद का शासन सौंपा गया था। उन्हें औरंगजेब से "माही मरातिब" सम्मान मिला।

अनुपसिंह संस्कृत भाषा का विद्वान तथा संगीतज्ञ था। अनूप विवके, तन्त्रशास्त्रद्ध, कामप्रबोध, काम शास्त्रद्ध, 'श्राद्ध प्रयोग चिंतामणि' और 'गीत गोविन्द' की अनूपोदय नामक टीका की रचना की। संगीताचार्य आवभट्ट ने उसके दरबार में रहते हुए 'संगीतअनूपांकूश', 'अनूपसंगीतविलास', 'अनूपसंगीतरत्नाकर', 'नष्ठोछिष्ट प्रबोधध्तौपदटीका' आदि ग्रन्थों की रचना की। उन्होने औरंगजेब से बचाने के लिए देश के दुर्लभ संस्कृत ग्रन्थों और मुर्तियों को बीकानेर में सुरक्षित स्थानों पर संग्रहित करवाया। मुर्तियों का विशाल भण्डार 33 करोड़ देवताओं का मंदिर कहलाता है। अनुपसिंह ने 'अनूपगढ' नामक दुर्ग का निर्माण करवाया। उनका निधन वि.स. 1755 ज्येष्ठ सुदि 9 (8 मई 1698 ई.) को अदूणी में हुआ था।

ISBN : 978-93-93166-08-1

महाराजा स्वरूपसिंह

महाराजा अनुपसिंह की मृत्यु के पश्चात् उनका ज्येष्ठ पुत्र स्वरूपसिंह अदूणी में 9 वर्ष की आयु में बीकानेर की गद्दी पर बैठे। उनका जन्म वि.स. 1746 भाद्रपद वदि 1 (23 जुलाई 1679 ई.) को हुआ था। आरम्भ से ही वह औरंगाबाद तथा बुहरान में बादशाह के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता रहा। उनकी अनुपस्थिति में बीकानेर राज्य का प्रशासन उनकी माता सीसोदणी चलाती रही। 2 वर्ष बाद ही मात्र 11 वर्ष की आयु में वि.स. 1757 मार्गशीष सुदि 15 (15 दिसम्बर 1700 ई.) को उनका निधन शीता रोग से हो गया था।

महाराजा सुजान सिंह

महाराजा स्वरूपसिंह की निःसन्तान मृत्यु के पश्चात् उनके छोटे भाई सुजान सिंह 10 वर्ष की आयु में वि.स. 1757 (1700 ई.) को बीकानेर की गद्दी पर बैठे। उनका जन्म वि.स. 1747 श्रावण सुदि 3 (28 जुलाई 1690 ई.) सोमवार को हुआ था। औरंगजेब के बाद बहादूरशाह, जहांदारशाह, फर्रूखसीयर, रफीउद्दरजात, रफीउद्दौला तथा मुहम्मदशाह दिल्ली के तख्त पर बैठे। ये बादशाह स्वयं ही चारों ओर से षडयंत्रों से घिरे रहे। अतः बीकानेर शासकों पर उनकी पकड़ ढीली हो गई। 1720 ई. में मुहम्मदशाह ने बीकानेर नरेश सुजानसिंह को दिल्ली दरबार में पेश होने का आदेश दिया। किन्तु मुगलों की कमजोर स्थिति का आकलन कर सुजानसिंह दिल्ली नहीं गये। तथा अपने कुछ सेवकों को दिल्ली व अजमेर भिजवा दिया। बीकानेर पर अनेक बार जोधपुर राज्य की ओर से आक्रमण हुए परन्तु सुजानसिंह ने अपने चातुर्य और विश्वसनीय सेनानायकों की सहायता से राज्य की प्रतिष्ठा को बनाये रखा। उनकी मृत्यु रोगग्रस्त होने से रायसिंहपुरा में वि.स. 1792 पोष सुदि 13 (16 दिसम्बर 1735 ई.) को हो गई।

ISBN : 978-93-93166-08-1

महाराजा जोरावर सिंह

महाराजा सुजान सिंह की मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र जोरावर सिंह वि.स. 1792 माघ वदि 9 (24 फरवरी 1736 ई.) में बीकानेर की गद्दी पर बैठे। उनका जन्म वि.स. 1769 माघ वदि 14 (14 जनवरी 1713 ई.) को हुआ था। जोधपुर राज्य के आक्रमण जोरावर सिंह के समय में भी चलते रहे। उनके समय में 3 माह 5 दिन ता जोधपुर का बीकानेर पर अधिकार रहा। उनके शासन में ही भादरा, चुरू तथा महाजन के ठाकुरों की विद्रोह प्रवृति को आसानी से दमन कर दिया गया। बीकानेर राज्य में आन्तरिक षडयन्त्रों, विद्रोहों तथा मारवाड़ के आक्रमणों के कारण महाराजा जोरावर सिंह राज्य सीमा का विस्तार नहीं कर सके।

जोरावर सिंह वीर, राजनीतिज्ञ और काव्य मर्मज्ञ थे। वे संस्कृत और भाषा के अच्छे कवि थे। उन्होंने संस्कृत भाषा के दो संस्कृत ग्रन्थ 'वैद्यकसार' और 'पूजापद्धति' लिखे तथा भाषा में 'रसिक प्रिया' और 'कविप्रिया' की टिकाएं लिखी। महाराजा जोरावर सिंह की स्मारक छतरी लेख के अनुसार उनकी निःसन्तान मृत्यु वि.स. 1803 ज्येष्ठ सुदि 6 (25 मई 1746 ई.) को अनूपपुर में बीमारी के कारण हो गई।

महाराजा गजसिंह

महाराजा जोरावर सिंह की निःसन्तान मृत्यु के पश्चात् बीकानेर राज्य का प्रबन्ध भूररका के ठाकुर कुशाल सिंह व मेहता बख्तारसिंह ने सम्भाला। परन्तु बाद में जोरावर सिंह के चचेरे भाई गजसिंह को बीकानेर राज्य की शासन सत्ता इस शर्त पर दी कि वह उनसे कभी भी उस समय तक का राज्यकोष का हिसाब नहीं मांगेगा। गजसिंह वि.स. 1802 आषाढ वदि 14 (17 जून 1745 ई.) में बीकानेर की गद्दी पर बैठे। इस पर अमरसिंह जो कि जोरावर सिंह के चचेरे

ISBN : 978-93-93166-08-1

भाईयों में ज्येष्ठ था नाराज होकर जोधपुर चला गया और जोधपुर के शासक अभयसिंह सहायता से एक विशाल सेना लेकर बीकानेर पर आक्रमण कर दिया। दोंनों पक्षों में युद्ध हुआ जिसमंे जोधपुर की सेना पराजित होकर वापिस लौट गई।

मुगल बादशाह मुहम्मदशाह को वजीर मंजूर अली खां (सफदरगंज) के विद्रोह का दमन करने के लिए गजसिंह ने सेना सहायता भेजी थी। इससे प्रसन्न होकर मुगल बादशाह ने उन्हे सात हजारी मनसब, "श्री राज राजेश्वर महाराजाधिराज महाराजा शिरोमणि" की उपाधि तथा "माही मरातिब" से सम्मानित किया। उनकी एक अहम उपलब्धि यह थी कि 1753 ई. में उन्हे बीकानेर राज्य में अपने सिक्के चलाने का अधिकार प्राप्त हो गया था। महाराजा गजसिंह ने पूनियां परगना जो कि महाराजा अनूपसिंह के छोटे पुत्र आन्नदसिंह की जागीर में था, को बीकानेर राज्य में मिला लिया था।

महाराजा गजसिंह एक प्रजा वत्सल शासक था। जब बीकानेर में वि.स. 1812 में अकाल पडा, तब उन्होने सदाव्रत खुलवाये तथा राज्य में अनेक नई इमारतों का जैसे शहरपनाह, नौहरगढ़ आदि का निर्माण करवाना प्रारम्भ किया, जिससे प्रजा को काम मिल सके। उन्होने अपने पुत्र राजसिंह को विद्रोह करने के कारण कैद कर लिया था। परन्तु अपनी मृत्यु से पुर्व उसे कैद से मुक्त कर दिया था। उनकी मृत्यु वि.स. 1644 चैत्र सुदि 6 (25 मार्च 1787 ई.) रविवार को हो गई।

महाराजा राजसिंह

महाराजा गजसिंह की मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र राजसिंह वि.स. 1844 बैसाख वदि 2 (4 अप्रेल 1787 ई.) में बीकानेर की गद्दी पर बैठे थे। उनका जन्म वि.स. 1801 कार्तिक वदि 2 (12 अक्टुबर 1744 ई.) को हुआ

ISBN : 978-93-93166-08-1

था। 21 दिन राज्य करने के बाद वि.स. 1844 बैसाख सुदि 8 को इनकी मृत्यु हो गई।

राजसिंह के प्रतापसिंह तथा जयसिंह दो पुत्र थे। दोनों उस समय अल्प व्यस्क होने के कारण राजसिंह के चचेरे भाई सूरतसिंह को संरक्षक बनाकर प्रतापसिंह को शासक बना दिया गया। सूरतसिंह ने प्रतापसिंह की गला घोंटकर हत्या कर दी।

महाराजा सूरतसिंह

महाराजा प्रतापसिंह की गला हत्या करके सूरतसिंह वि.स. 1844 अश्विन सुदि (21 अक्टुबर 1787 ई.) में बीकानेर की गद्दी पर बैठा। उनका जन्म वि.स. 1802 पोष वदि 6 (18 दिसम्बर 1765 ई.) को हुआ था। उनके समय बीकानेर राज्य के जोधपुर व जयपुर राज्यों के साथ कभी मित्रता तो कभी संर्घष वाले संबंध रहे। 9 मार्च 1818 को बीकानेर राज्य और अंग्रेजो के मध्य संधि हुई। संधि पर अंग्रेजो की ओर से चार्ल्स थियोफिलस मैटकॉफ ने तथा महाराजा सूरतसिंह की ओर से काशीनाथ ओझा ने हस्ताक्षर किये। संधि के परिणाम स्वरूप बीकानेर राज्य की रक्षा का भार अंग्रेजो को मिल गया तथा बीकानेर नरेश पूर्णतः स्वतंत्र न रहकर अंग्रेजो के अधीन हो गये। इस संधि के 10 साल बाद सूरतसिंह की मृत्यु वि.स. 1885 चैत्र सुदि 1 (24 मार्च 1828 ई.) को हो गई।

महाराजा रतनसिंह

महाराजा सूरतसिंह की मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र रतनसिंह 38 वर्ष की आयु में वि.स. 1885 बैसाख वदि 5 को बीकानेर की गद्दी पर बैठे। उनका जन्म वि.स. 1847 पोष वदि 1 (अप्रेल 1828 ई.) को हुआ था। 1836 में उन्होने अपने सरदारों को शपथ दिलाई कि वे अपनी पुत्रियों का वध नहीं करेगें, जो

ऐसा करेगा उसका ठिकाना जप्त कर लिया जाएगा। 1844 ई. में उन्होने घोषणा कि सरदार अपनी हैसियत के अनुसार विवाह में खर्च करेगें। महाराजा रतनसिंह के शासन काल के दौरान अंग्रेजो व सिक्खों के मध्य दो बडी लड़ाईयॉ हुई जिनमें उन्होने अंग्रेजो की ओर से भाग लिया। महाराजा रतनसिंह की मृत्यु वि.स. 1908 श्रावण सुदि 11(7 अगस्त 1851 ई.) को हो गई।

महाराजा सरदार सिंह

महाराजा रतनसिंह की मृत्यु पश्चात् सरदार सिंह 33 वर्ष की आयु में वि.स. 1908 भाद्रपद वदि 9 (19 अगस्त 1851 ई.) को बीकानेर की गद्दी पर बैठे। उनका जन्म वि.स. 1875 भाद्रपद सुदि 14 (13 सितम्बर 1818 ई.) ्को हुआ था। उनके शासन का काल के दौरान 1857 की क्रान्ति में महाराज ने पूर्ण रूप से अंग्रेजो की सहायता की तथा क्रान्तिकारियों के विद्रोह को दबाया। उसने अंग्रेज अफसरों के परिवारों का पता लगाया तथा उन्हे संरक्षण प्रदान किया। महाराजा सरदार सिंह की निःसन्तान मृत्यु वि.स. 1929 बैसाख सुदि 8 (16 मई 1872 ई.) को हो गई।

महाराजा डुंगरसिंह

महाराजा सरदार सिंह निःसन्तान थे। उन्होने अपने कुल के दो कुमारों को अपने पास रखा था। महाराजा सरदार सिंह की मृत्यु पश्चात् उन दोनों कुमारों में से डुंगरसिंह मात्र 18 वर्ष की आयु में 11 अगस्त 1872 ई. को बीकानेर की गद्दी पर बैठे। उनका जन्म वि.स. 1911 भाद्रपद वदि 14(;22 अगस्त 1854 ई.) को हुआ था। 24 अगस्त 1879 ई. में महाराजा डुंगरसिंह तथा अंग्रेजो के मध्य लुणकरणसर तथा छापर कारखानों में बनाये जाये वाले नमक की उत्पादन सीमा निर्धारित करने तथा अपने यहॉ का नमक उक्त राज्य में खपाने के लिए विभिन्न शर्तों के साथ समझौता हुआ जिसे 'बीकानेर साल्ट एग्रीमेंट' कहा जाता

है।

महाराजा डुंगरसिंह 'आधुनिक बीकानेर के जन्मदाता' कहे जाते हैं। उन्होने अनेक स्थानो पर न्यायालय, जिलें और तहसीलें बनाई। पुलिस, आबकारी तथा कर संबंधी अनेक नियम बनाये। उन्होने 1885 ई. में सर्वप्रथम विघुत उत्पाद का कार्य बीकानेर में प्रारम्भ करवाया जो राज्य के विकास और नव ओद्यौगिकीकरण के सूत्रपात का प्रथम चरण सिद्ध हुआ। इसी वर्ष बीकानेर शहर में जलापूर्ति की समस्या को दूर करने के लिए किले के पास चोतीना नामक कुआँ पर पानी खींचने की विघुत मोटर लगवाई। उन्होने अनेक स्थानों पर औषधालय तथा नये स्कूल बनवाये। महाराजा डुंगरसिंह की मृत्यु 19 अगस्त 1889 ई. को हो गई।

महाराजा गंगासिंह

महाराजा डुंगरसिंह की मृत्यु पश्चात् गंगासिंह वि.स. 1944 भाद्रपद सुदि 13 (31 अगस्त 1887 ई.) को मात्र 10 वर्ष की आयु में बीकानेर की गद्दी पर बैठे। उनका जन्म वि.स. 1937 अश्विन सुदि 10 (13 अक्टुम्बर 1880 ई.) को हुआ था। उनकी अल्पायु होने के कारण राज्य प्रशासन के संचालन हेतु एक रीजेंसी कौंसिल का गठन किया गया था जो महाराज के व्यस्क होने तक कार्य करती रही। महाराजा गंगासिंह का शासन काल 1887-1943 ई. बीकानेर राज्य के इतिहास में 'स्वर्गयुग' कहा जाता है। बीकानेर राज्य में गंगनहर का आगमन, रेल तथा सड़क यातायात का विकास एवं आधुनिक मशीनरी का आना गंगासिंह के शासनकाल की महत्वपूर्ण उपलब्धियॉ थी। उनके काल में अनेक विद्यालय, महाविद्यालय तथा चिकित्सालय खोले गये। 1896 ई में पहली बार राज्य के पलाना नामक क्षेत्र में कोयले के भण्डार की जानकारी मिली। तत्पश्चात् कोयले खनन उद्योग प्रचलन में आया।

ISBN : 978-93-93166-08-1

1899-1900 ई. में पूरे मारवाड़ में भयंकर अकाल पड़ा, जिसे छपनिया का अकाल कहते है। इससे निपटने के लिए गंगासिंह ने तमाम प्रयास किये। राजधानी में शहरपनाह तथा गजनेर की झील के निर्माण करवाये गये। उनके द्वारा प्रिंस विजयसिंह मेमोरियल हॉस्पिटल, लालगढ़ राजमहल, गंगा थियेटर एवं स्टेडियम आदि निर्माण करवाये गये। उनके समय में संचार साधनों का बहुत अधिक विकास हुआ । राज्य में रेलों का जाल बिछ गया। महाराजा गंगासिंह की मृत्यु 63 वर्ष की आयु में बम्बई में वि.स. 1999 माघ वदि 12 (2 फरवरी 1943 ई.) को हो गई।

महाराजा सादुलसिंह

महाराजा गंगासिंह की मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र सादुलसिंह 24 फरवरी 1943 ई. में बीकानेर की गद्दी पर बैठे थे। उनका जन्म 7 सितम्बर 1902 ई. को हुआ था। उनके गद्दी पर बैठने के मात्र 4 वर्ष के बाद ही देश स्वतंत्र हो गया तथा लोकतंत्र की स्थापना हो गई। बीकानेर वतनजागीर का निर्माण सूबा अजमेर, सरकार बीकानेर के परगना, बीकमपुर, बरसलपुर बीकानेर और पूगल, सरकार नागौर के परगना द्रोणपुर तथा सूबा दिल्ली, सरकार हिसार के परगना सिद्धमुख, मांडग, बैणीवाल के क्षेत्रों से मिलकर हुआ था। इसे बीकानेर दर-वो-वसत का नाम दिया गया था।

24 जुलाई 1947 ई. को भारत के साथ विलय के समझौते पर महाराज ने सर्वप्रथम हस्ताक्षर किये थे। 30 मार्च 1949 को बीकानेर राज्य का विलीनीकरण हो गया। महाराजा सादुलसिंह की मृत्यु 25 सितम्बर 1950 ई. को लंदन में हो गई। ये बीकानेर के अन्तिम शासक महाराजा थे।